15

ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै...

ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै,
जाको जिनवानी न सुहावै ।।टेक.।।

वीतराग से देव छोडकर, भैरव यक्ष मनावै।
कल्पलता दयालुता तजि, हिंसा इन्द्रायनि वावै ।।१।। ऐसा।।

रुचै न गुरु निर्ग्रन्थ भेष बहु, –परिग्रही गुरु भावै।
परधन परतियको अभिलाषै, अशन अशोधित खावै ।२। ऐसा।।

पर की विभव देख ह्वै सोगी, परदुःख हरख लहावै।
धर्म हेतु इक दाम न खरचै, उपवन लक्ष बहावै ।।३।। ऐसा।।

ज्यों गृह में संचै बहु अघ त्यों, वनहू में उपजावै।
अम्बर त्याग कहाय दिगम्बर, बाघम्बर तन छावै ।।४।। ऐसा।।

आरम्भ तज शठ यंत्र मंत्र करि, जनपै पूज्य मनावै।
धाम वाम तज दासी राखै, बाहिर मढ़ी बनावै ।।५।। ऐसा।।

नाम धराय जती तपसी मन, विषयनि में ललचावै।
'दौलत' सो अनन्त भव भटकै, ओरन को भटकावै ।६। ऐसा।।

जिस जीव को जिनवाणी अच्छी नहीं लगती है, तथा दुर्लभ मनुष्य पर्याय मिलने पर भी मोह महामद पीने वाला जीव अधोगति में क्यों नहीं जायेगा ।

जो श्रेठ वीतरागी देव को छोड़कर भैरव, यक्ष आदि कुदेवों की पूजा करता है, तथा दया-करूणा की कल्पबेल को छोड़कर हिंसा के इन्द्रायण (बट) बीज को बोता है।

जिसे निर्ग्रन्थ गुरु तो अच्छे नहीं लगते अपितु अनेक भेष धारण करने वाले परिग्रही गुरु ही अच्छे भाषित होते हैं, वह जो सदा परधन व परस्त्री की अभिलाषा करता है, तथा बिना शोधा हुआ अर्थात् अशुद्ध भोजन ही करता है।

दूसरों के वैभव को अर्थात् पराई सम्पत्ति को देखकर दुःखी होता है, वह दूसरों के दुःख को देखकर प्रसन्न होता है, धर्म कार्य के लिये जरा भी धन खर्च नहीं करता किन्तु विषय भोगों के लिये घूमने फिरने आदि में लाखों रुपये पानी की तरह बहा देता है।

वन में अर्थात् एकांत स्थान में जाकर भी घर की भांति बहुत पाप एकत्रित करता है, वस्त्र का त्यागकर दिगम्बर कहलाता है परन्तु रागद्वेष होने से अपने शरीर को बाघ आदि की खाल से ढांकता है।

आरम्भ का त्यागी होकर दुष्ट भाग से तंत्र-मंत्र करता है,और अज्ञानी लोगों से अपने को पुजवाता है । नगर के घर संसार का तो त्याग करता है मगर वन में कुटिया बनवाता है एवं दासी रखता है।

यति, तपस्वी जैसे ऊँचे नाम को धारण करते हुये जिसका मन सदैव विषयों में ललचाता है। ऐसे तीव्र मोही जीव के लिये कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि वह स्वयं भी अनन्त जन्मों तक संसार में भटकता है और दूसरों को भी भटकाता है। अतः ऐसा जीव निश्चित ही अधोगति में जायेगा ।